भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur

An ISO 9001:2015 Certified Organisation

# कापूस हंगाम २०२३ – २४: साप्ताहिक पीक सल्ला

## (कालावधी २२ ऑगस्ट ते २८ ऑगस्ट २०२३)

| महाराष्ट्र | | मागील आठवड्यातील प्रत्यक्ष पाऊस (मिमी) | | | | | पडणाऱ्या पावसाचा अंदाज (मिमी) | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | ऑगस्ट | | | | | ऑगस्ट | | | | |
| | | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| | धुळे | 0 | 0 | 1.5 | 10.5 | 0 | 6 | 5 | 8 | 9 | 8 |
| | नंदुरबार | 0.5 | 0 | 0 | 2.5 | 0 | 6 | 3 | 5 | 6 | 6 |
| | जळगाव | 0 | 9 | 0 | 0 | 0 | 10 | 7 | 8 | 10 | 9 |
| | अहमदनगर | 0 | 3 | 1 | 0 | 0 | 9 | 6 | 7 | 7 | 7 |
| | औरंगाबाद | 0 | 10 | 2 | 0 | 0 | 12 | 8 | 8 | 5 | 5 |
| | जालना | | | | | | 10 | 6 | 5 | 7 | 5 |
| | बीड | 0 | 0.4 | 0 | 0 | 0 | 1 | 3 | 6 | 3 | 4 |
| | नांदेड | 0 | 19 | 0 | 0 | 0 | 3 | 2 | 2 | 6 | 7 |
| | परभणी | 0 | 7 | 2.8 | 0.3 | 0 | 9 | 4 | 2 | 2 | 4 |
| | हिंगोली | 0 | 16 | 13.5 | 7 | 0 | 7 | 4 | 2 | 4 | 6 |
| | बुलढाणा | 0 | 0 | 22 | 0 | 0 | 7.7 | 1.2 | 8.9 | 4.9 | 6 |
| | अकोला | 0 | 6.5 | 9.9 | 0.1 | 0 | 12 | 3.2 | 9.2 | 10 | 11 |
| | वाशीम | 0 | 0 | 5 | 4 | 0 | 12 | 2.4 | 7.2 | 6.6 | 10 |
| | अमरावती | 4.2 | 8.6 | 1.4 | 4.8 | 0 | 13 | 4.9 | 6.3 | 7.7 | 8 |
| | यवतमाळ | 1.1 | 18 | 0 | 1 | 0 | 9.7 | 8.5 | 6.8 | 9.5 | 8 |
| | वर्धा | 0 | 44 | 11 | 0 | 0 | 9.6 | 2 | 9.2 | 8.7 | 6 |
| | नागपूर | 38.7 | 14 | 0.6 | 0 | 0 | 8.7 | 13 | 12 | 6.1 | 9 |
| | चंद्रपूर | 9 | 58 | 0 | 0 | 0 | 11 | 11 | 9.5 | 11 | 10 |
| पावसाचे प्रमाण आणि रंग कोड | | 0.1 to 2.4 mm | | 2.5 to 15.5 mm | | 15.6 to 64.4 mm | | 64.5 to 115.5 mm | | 115.6 to 204.4 | |
| पावसाची श्रेणी | | खूप हलका पाऊस | | तुरळक पाऊस | | मध्यम स्वरूपाचा पाऊस | | मुसळधार पाऊस | | अति मुसळधार पाऊस | |

**पीक परिस्थिती:**

**अकोला:**

- पेरणी केलेले पीक ४७ ते ५४ दिवसांचे असून चौरस निर्मिती अवस्थेत आहे.
- डवरा चालवणे, तण काढणे, खत टाकणे आणि कीटकनाशक फवारण्या सुरू आहे.
- उशिरा पेरणी केलेल्या कपाशीवर तणांचा प्रादुर्भाव जास्त आहे.
- कीड आणि रोगांचा प्रादुर्भाव नाही परंतु रसशोषक किडींचा प्रादुर्भाव उशिरा पेरणी केलेल्या कपाशीमध्ये आर्थिक नुकसान पातळी खाली आहे.
- रोगांचा प्रादुर्भाव नाही

**नांदेड:**

- पीक ४० ते ६० दिवसांचे असून शाखीय वाढ ते चौरस निर्मिती अवस्थेत आहे.
- कीड व रोगांचा प्रादुर्भाव नाही परंतु फुल किडे व तुडतुड्यांचा प्रादुर्भाव असून तो आर्थिक नुकसान पातळी खाली आहे.

**राहुर□**

- पीक ५५ ते ८० □दवसांचे असून □दवसांचे असून शा□खय वाढ ते फुले ये□या□या अव□थेत आहे.
- डवरा चालवणे, तण काढणे सु□ आहे.
- रस शोषक क□टकांचा □ादुभाव आ□थक नुकसान पातळी वर आहे.
- हरयाल□, पाथ□नयम इ□याद□ तणांचा शेतात □ादुभाव आढळला आहे.
- मायलोसेरस भुं□यामुळे कापसाचे नुकसान झाले आहे.

**पीक स□ला:**

अकोला येथे, गे□या आठव□यात □या भागात अ□तवृ□ट□ झाल□ □या भागातील कपाशी□या शेतातील अ□त□र□त पाणी काढून टाक□याचा स□ला शेतक□यांना दे□यात आला आहे. ओलावा संवधनासाठ□ ५० ते ५५ डीएएस दराने कापूस शेतात □नय□मत अंतराने कुदळा□या टायनाला दोर□ बांधून नांगर□याचा स□ला □दला जातो. कापसात डवरा चालवणे आ□ण तण काढणे यासार□या आंतरमशागती□या □□या करा□या. बागायती संक□रत बीट□ कापसासाठ□ ९० □कलो न□/हे□टरचे दुसरे □वभाजन करावे. फुलो□या□या अव□थेत २% न□ आ□ण ब□ड □वकासा□या अव□थेत २% डी ए पी ची फवारणी करावी. कापसाची पाती आ□ण फुले नैस□गक□र□या कमी होऊ नयेत यासाठ□ एन ए ए ४.५ एसएल @ ४ □मल□/१० □लटर आ□ण कापसाची अ□त□र□त शाखीय वाढ रोख□यासाठ□ □लोरमे□वॅट □लोराईड @ १० □मल□/१० □लटर पा□यात फवारणी करावी. गुलाबी ब□डअळीचे □नर□□ण कर□यासाठ□ कामगंध सापळे @ ५/हे□टर लावा. गुलाबी ब□डअळीची अंडी घालणे आ□ण शोषक क□टकांचे □नयं□ण रोख□यासाठ□ कडू□नंब आधा□रत क□टकनाशकांची जसे क□ अझा□डरा□ट□न ३०० पीपीएम @ १०० □मल□ □कंवा १५०० पीपीएम @ ५० □मल□ □कंवा ३००० पीपीएम ४० □मल□/१० □लटर पा□यात फवारणी सु□ करावी. कपाशीम□ये पॅरा□व□टची ल□णे आढळ□यास, बा□धत झाडे कॉपर ऑ□स□लोराईड ५० ड□□यूपी @ ३० □ॅम □कंवा काब□डा□झम ५० ड□□यूपी @ ४ □ॅम + न□ १५० □ॅम १० □लटर पा□यात □मसळून ४८ तासां□या आत रोग□□त झाडां□या मुळांशी □यावे.

नांदेड येथे, शेतक□यांना ६० डीएएस दराने □संचन केले□या □पकासाठ□ ६० □कलो न□ □□त हे□टर□ टॉप □□संग दे□याचा स□ला दे□यात आला आहे. फुलक□□यांची सं□या □नयं□त कर□यासाठ□ ८ ते १० □पवळे □चकट सापळे/एकर आ□ण □नळे □चकट सापळे ८-१०/एकर लावावे. रसशोषक क□ड रोख□यासाठ□ आ□ण कापसावर गुलाबी ब□डअळी अंडी घालू नयेत □हणून □नंबोळीअक□ ५% □कंवा कडु□नंब तेल @ १ □लटर/एकर फवारणी करावी. गुलाबी ब□डअळी□या पतंगा□या □□याकलापांवर ल□ ठेव□यासाठ□ कामगंध सापळे @ ५ सापळे/हे□टर □था□पत करावे. डोमक□या गोळा क□न न□ट करा□या. रसशोषक क□ड आ□थक नुकसान पातळी ओलांड□यास □लॉ□नक□मड ५० ड□□यूजी @ ४ □ॅम □कंवा बु□ोफे□झन २५ एससी @ २० □मल□ □कंवा डायफ□थयुरॉन ५० ड□□यूपी @ १२ □ॅम/१० □लटर पा□यात □मसळून फवारणी करावी.

राहुर□ येथे शेतक□यांना आव□यकता अस□यास वेळेवर आंतरमशागतीची कामे कर□याचा स□ला □दला जातो. ओ□या माती□या □□थतीत, जेथे हाताने तण काढणे श□य नाह□ तेथे जर शेतात □ामु□याने गवताळ तणांचा □ादुभाव झाला असेल तर उगव□यानंतर २५-३० डीएएस □माणे □□वझालोफॉप इथाइल ५% ईसी @२ □म□ल/□लटर पाणी, आ□ण □द पाने असले□या तणांचा □ादुभाव झाला असेल तर पायर□थओबॅक सो□डयम १०% ईसी @ १.२५ □म□ल/□लटर पाणी तणनाशकांचा वापर करावा. □कंवा पाय□र□थओबॅक सो□डयम ६% ईसी + □□वझालॉफॉप इथाइल ४% ईसी @ २-२.५□म□ल/□लटर पाणी गवताळ आ□ण □द-पाल□दार तणां□या □नयं□णासाठ□ वापर करावा. □पवळे □चकट सापळे @ ८ /एकर आ□ण □नळे □चकट सापळे @ ८/एकर फुलक□□यां□या □नर□□णासाठ□ □था□पत करावे. रस शोषक क□टकांचे □नर□□ण कर□यासाठ□ व गुलाबी ब□डअळी अंडी घालू नयेत □हणून □नंबोळीअक□ ५% ईसी □कंवा कडु□नंब तेल @ १ ल□टर/एकर फवार□याचा स□ला □दला जातो. गुलाबी ब□डअळी□या पतंगा□या □□याकलापांवर ल□ ठेव□यासाठ□ कामगंध

सापळे @ ५ सापळे/हेक्टर स्थापित करावे. डोमकळ्या गोळा करून त्वरित नष्ट करा. रस शोषक कीटक आर्थिक नुकसान पातळी ओलांडल्यास फ्लॉनिकॅमिड ५० डब्ल्यूजी @ ४ ग्रॅम किंवा बुप्रोफेझिन २५ एस सी @ २० मिली किंवा डायफेन्थियुरॉन ५० डब्ल्यूपी @ १२ग्रॅम/ १० लिटर पाण्यात मिसळून फवारणी करावी. पानावरील बुरशीजन्य ठिपके आणि बुरशीजन्य बोंड सड रोगांचे व्यवस्थापन करण्यासाठी कार्बेन्डाझिम ५० डब्ल्यू.पी @0.04% किंवा कार्बेन्डाझिम १२%+मँकोझेब ६३% डब्ल्यू.पी @०.३% किंवा क्रेसोक्सिम-मिथाइल ४४ .३ एस सी @ ०.१% किंवा प्रोपिनेब ७० डब्ल्यूपी @ ०.२५% किंवा प्रोपिकोनाझोल २५ ईसी@ ०.१% किंवा मेटिराम ५५ % + पायराक्लोस्ट्रोबिन ५ % डब्ल्यूजी @०.२% किंवा अझॉक्सीस्ट्रोबिन १८ .२ % डब्ल्यू/डब्ल्यू +डायफेनोकोनाझोल ११ .४ % डब्ल्यू/डब्ल्यू एस सी @०.१% किंवा फ्लूक्सापायरॉक्साड १६७ ग्रॅम/लिटर+ पायराक्लोस्ट्रोबिन ३३३ ग्रॅम/लिटर एस सी @ ०.६% पाण्यात फवारणी करावी.

The detailed information regarding cotton production technology, e.g. selection of soil, varieties, fertilizer application, sowing methods, irrigation systems, management of weeds, insect pests and diseases, etc. can be availed from an android based **CICR Cotton App** developed by ICAR-CICR, Nagpur. The app can be downloaded free of cost from Google play store. Additionally, the crop growth stage specific and weather based weekly advisory are uploaded on the website of ICAR-CICR also to be consulted for the benefit of farmers